कक्षा - आठवीं विषय - हिन्दी व्याकरण

पाठ - 1 भाषा - बोली, लिपि और व्याकरण

भाषा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह भाषा के माध्यम से अपनी भावनाओं, विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है। अतः भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम बोलकर, लिखकर, सुनकर अथवा पढ़कर अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

भाषा के तीन भेद होते हैं —

1) मौखिक भाषा 2.) लिखित भाषा 3.) सांकेतिक भाषा।

1.) **मौखिक भाषा** → भाषा के जिस रूप से मन के भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान बोलकर या सुनकर किया जाता है, उसे भाषा का मौखिक रूप कहते हैं। जैसे—

(i) कल हमारे विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता है।

2.) **लिखित भाषा** → भाषा के जिस रूप से भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान लिखकर या पढ़कर किया जाता है, उसे भाषा का लिखित रूप कहते हैं; जैसे—

(i) 'रामचरितमानस' तुलसीदास द्वारा रचित है।

3.) **सांकेतिक भाषा** → भाषा के जिस रूप से भावों को संकेतों के माध्यम से समझा जाता है, उसे भाषा का सांकेतिक रूप कहते हैं; जैसे —

(i) मुँह पर उंगली रखकर चुप रहने का इशारा करना।

बोली

किसी छोटे क्षेत्र में बोली जाने वाली मौखिक भाषा को बोली कहते हैं। जैसे — ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि।

भारतीय भाषाएँ — भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। भारतीय संविधान ने 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की है, ये हैं —

मलयालम	कोंकणी	असमिया	मैथिली	संथाली	पंजाबी	सिंधी
कश्मीरी	तमिल	गुजराती	डोगरी	बोडो	नेपाली	संस्कृत
कन्नड़	उर्दू	मराठी	बंगला	तेलगू	उड़िया	मणिपुरी

हिंदी—

भारत में 1652 बोलियाँ प्रचलित हैं परन्तु हिन्दी सबसे

Scanned with CamScanner

पाठ-1 भाषा-बोली, लिपि और व्याकरण

अधिक बोली और समझी जाती है। इसलिए संविधान ने इसे राजभाषा का दर्जा दिया है। विश्व में सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषाओं में हिंदी दूसरे स्थान पर है।

लिपि

भाषा को लिखित रूप देने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि होती है। नीचे कुछ भाषाएँ तथा उनकी लिपियाँ दी जा रही हैं-

भाषा	लिपि
अंग्रेजी	रोमन
उर्दू - फ़ारसी	फ़ारसी
कश्मीरी	शारदा
पंजाबी	गुरुमुखी
मराठी / नेपाली	देवनागरी
हिंदी / संस्कृत	देवनागरी

व्याकरण

व्याकरण का अर्थ है- विश्लेषण करना। भाषिक व्यवहार के विश्लेषण के आधार पर भाषा के जो नियम बनाए गए हैं, उन्हें व्याकरण कहते हैं तथा किसी भी भाषा के शुद्ध रूप का बोध कराने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं। व्याकरण किसी भी भाषा के लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि व्याकरण, भाषा को परिमार्जित करके उसे मानक रूप प्रदान करता है। शब्दों के अशुद्ध प्रयोग पर कड़ा अनुशासन रखता है।

व्याकरण के तीन भेद होते हैं-

1.) वर्ण-विचार 2) शब्द-विचार 3.) वाक्य-विचार

1.) वर्ण-विचार - वर्ण-विचार में वर्णों की बनावट, उच्चारण, लेखन आदि पर विचार किया जाता है।

2) शब्द-विचार - शब्द विचार में शब्दों के विभिन्न भेद, रूप, उत्पत्ति व प्रयोग आदि के विषय पर विचार किया जाता है।

3) वाक्य-विचार - वाक्य-विचार में वाक्य रचना, प्रकार, प्रयोग, विराम-चिह्न आदि के विषय पर विचार किया जाता है।

*****

पाठ-1 भाषा-बोली, लिपि और व्याकरण

गृह-कार्य

1.) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।
(क) भाषा किसे कहते हैं तथा भाषा के कितने भेद हैं?
(ख) व्याकरण सीखने के क्या लाभ हैं?
(ग) भारतीय संविधान ने कितनी भाषाओं को मान्यता प्रदान की है?
(घ) भारत में कितनी बोलियाँ प्रचलित हैं?
(ङ.) लिपि किसे कहते हैं? किन्हीं चार लिपियों के नाम भाषा सहित बताओ।

2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए —
देवनागरी 1652 मौखिक भाषा लिखना 22 सांकेतिक भाषा
बोलियाँ लिखित भाषा
(क) भाषा के तीन रूप हैं: ...., ... और ......।
(ख) भारतीय संविधान में ...... भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।
(ग) भारत में ...... बोलियाँ प्रचलित हैं।
(घ) संस्कृत .... लिपि में लिखी जाती है।
(ङ.) ब्रज, अवधी, भोजपुरी इत्यादि ...... हैं।
(च) व्याकरण हमें शुद्ध रूप से बोलना और ...... सिखाता है।

3.) सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (X) का चिह्न लगाओ—
(क) बड़े-बड़े शहरों में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है। ☐
(ख) भाषा का रूप मानक होता है। ☐
(ग) भारतीय संविधान में 18 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ☐
(घ) कश्मीरी भाषा की लिपि शारदा है। ☐
(ङ.) व्याकरण, भाषा को परिमार्जित करके उसे मानक रूप प्रदान करता है। ☐

*****

Scanned with CamScanner

कक्षा - आठवीं विषय - हिन्दी व्याकरण
पाठ - 2 वर्ण - विचार

Date
Page ④

वर्ण

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते।
वर्णों के व्यवस्थित और क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।
वर्ण के दो भेद हैं — 1) स्वर 2) व्यंजन।

1) **स्वर** — स्वर स्वतंत्र रूप से उच्चारित होनेवाली वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में श्वास वायु बिना किसी रुकावट के सीधी बाहर निकलती है।
हिंदी भाषा में 11 स्वर होते हैं, जिन्हें स्वरमाला भी कहा जाता है —
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ
स्वरों के तीन भेद होते हैं —
(1) ह्रस्व स्वर (2) दीर्घ स्वर (3) प्लुत स्वर

(1) **ह्रस्व स्वर** — जिन स्वरों के उच्चारण में कम से कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।
इनकी संख्या चार है — अ, इ, उ, ऋ। इन स्वरों को मूल स्वर भी कहते हैं।

(2) **दीर्घ स्वर** — जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है — आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। इन्हें गुरु स्वर भी कहा जाता है।

(3) **प्लुत स्वर** — जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी ज्यादा समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं; जैसे — ओ३म्। परंतु हिंदी में इसका आजकल प्रचलन समाप्त हो गया है।

अयोगवाह — अनुस्वार (अं), अनुनासिक (अँ) तथा विसर्ग (अः) को अयोगवाह कहते हैं। इन तीनों ध्वनियों को न तो स्वर कहा जाता है और न ही व्यंजन, क्योंकि इनके उच्चारण में स्वरों की सहायता आवश्यक है। अतः ये व्यंजन नहीं हैं; इसलिए हम इन्हें अयोगवाह कहते हैं।

अनुस्वार — जिनके उच्चारण में वायु केवल नासिका से निकलती है, उन्हें अनुस्वार कहते हैं; जैसे — पंकज, संगीता आदि।

Scanned with CamScanner

पाठ-2 वर्ण-विचार

अनुनासिक (ँ) – जिनके उच्चारण में वायु नासिका तथा मुख दोनों से निकलती है, उन्हें अनुनासिक कहते हैं; जैसे – साँस, खाँसी आदि।

विसर्ग (:) – विसर्ग का उच्चारण हल्के रूप से 'ह्' ध्वनि के समान होता है। इसमें वर्ण के आगे दो बिंदु लगाए जाते हैं; जैसे – अतः, प्रायः, क्रमशः, प्रातःकाल आदि।

व्यंजन

व्यंजन – स्वरों की सहायता से उच्चरित उन ध्वनियों को व्यंजन कहते हैं जिनके उच्चारण में श्वास-वायु मुख के अलग-अलग भागों से टकराकर निकलती है। हिंदी में कुल 33 व्यंजन होते हैं, परंतु संयुक्त तथा अन्य व्यंजन को मिलाकर इनकी संख्या 39 हो जाती है।

व्यंजन के भेद – व्यंजन को मुख्य रूप से तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है –

(1) स्पर्श व्यंजन (2) अंतःस्थ व्यंजन (3) ऊष्म व्यंजन

(1) **स्पर्श व्यंजन** – स्पर्श का अर्थ है – छूना। 'क' से 'म' तक के वर्ण स्पर्श व्यंजन हैं। इनके उच्चारण के समय जिह्वा द्वारा मुख के अलग-अलग स्थानों को स्पर्श करने के कारण इन्हें स्पर्श व्यंजन कहा जाता है।

(2) **अंतःस्थ व्यंजन** – अंतःस्थ का अर्थ है – मध्य में स्थित होना। जिन व्यंजनों के उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के विभिन्न भागों को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती तथा मध्य में स्थित रहती है, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं; जैसे – य्, र्, ल्, व् चार अंतःस्थ व्यंजन हैं।

(3) **ऊष्म व्यंजन** – ऊष्म का अर्थ है – गरम। जिन व्यंजनो के उच्चारण के समय वायु रगड़ खाकर निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये चार हैं – श्, ष्, स्, ह्। इनका उच्चारण करते समय मुख में ऊष्मा (गर्मी) उत्पन्न होती है तथा श्वास में तेजी आती है।

Scanned with CamScanner

पाठ-2 वर्ण-विचार

(4) संयुक्त व्यंजन – दो अथवा दो से अधिक वर्णों के संयोग से बनने वाले व्यंजन को संयुक्त व्यंजन कहते हैं; जैसे – क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।

(5) द्वित्व व्यंजन – एक जैसे दो व्यंजनों का एक साथ आना द्वित्व व्यंजन कहलाता है; जैसे – सज्जन, प्रसन्न, गन्ना आदि ।

व्यंजनों का वर्गीकरण –

1) उच्चारण स्थान के आधार पर – ध्वनियों के उच्चारण में श्वास वायु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह श्वास नलिकाओं के मार्ग से होती हुई निकलती है और जिह्वा से संबंध स्थापित करके मुख के भिन्न-भिन्न भागों से टकराकर ध्वनि उत्पन्न करती है। इसी ध्वनि को 'वर्ण' कहते हैं। जो ध्वनि मुख के जिस भाग से टकराती है, वही उस वर्ण का उच्चारण-स्थान होता है। इस दृष्टि से इन्हें नौ वर्गों में रखा गया है –

क्रम सं०	उच्चारण स्थान	वर्ण
1.	कंठ्य	– कंठ से बोले जाने के कारण इन्हें कंठ्य वर्ण कहते हैं; जैसे – क्, ख्, ग्, घ्, ङ् ।
2.	तालव्य	– तालु से बोले जाने के कारण इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं; जैसे – च्, छ्, ज्, झ्, ञ् ।
3.	मूर्धन्य	– मूर्धा से बोले जाने के कारण इन्हें मूर्धन्य वर्ण कहते हैं; जैसे – ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, ष ।
4.	दंत्य	– दाँतों से बोले जाने के कारण इन्हें दंत्य वर्ण कहते हैं; जैसे – त्, थ्, द्, ध्, न् ।
5.	ओष्ठ्य	– ओठों से बोले जाने के कारण इन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं; जैसे – प्, फ्, ब्, भ्, म ।
6.	नासिक्य	– जिनका उच्चारण मुख तथा नासिका से होता है, उन्हें नासिक्य वर्ण कहते हैं; जैसे – अं, ङ्, ञ्, ण्, न्, म्
7.	कंठोष्ठ्य	– जिनका उच्चारण कंठ तथा ओठों से होता है, उन्हें कंठोष्ठ्य वर्ण कहते हैं; जैसे – ओ, औ ।
8.	कंठ-तालव्य	– जिनका उच्चारण कंठ तथा तालु से होता है, उन्हें कंठ-तालव्य वर्ण कहते हैं; जैसे – ए, ऐ ।

Scanned with CamScanner

9. दंतोष्ठ्य – जिनका उच्चारण दाँत तथा ओठों की सहायता से होता है, उन्हें दंतोष्ठ्य वर्ण कहते हैं; जैसे - व् ।

2) **श्वास (प्राण) के आधार पर** – श्वास के आधार पर व्यंजनों को दो भागों में बाँटा गया है—

(क) अल्पप्राण (ख) महाप्राण

(क) अल्पप्राण – जिन व्यंजनों के उच्चारण में फेफड़ों से आनेवाली वायु की मात्रा कम लगती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं, इसमें प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा व पाँचवाँ व्यंजन तथा ड़, य, र, ल, व आते हैं।

(ख) महाप्राण – जिन व्यंजनों के उच्चारण में फेफड़ों से निकलने वाली श्वास वायु की मात्रा अधिक होती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं; जैसे - प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा व्यंजन तथा श, ष, स, ह आते हैं।

3) **स्वरतंत्रियों में कंपन के आधार पर** – स्वरतंत्रियों में कंपन के आधार पर व्यंजनों को दो भागों में बाँटा गया है—

(क) अघोष (ख) सघोष

(क) अघोष – जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं होता है, उन्हें अघोष कहते हैं; जैसे - क, ख, च, छ, ट आदि ।

(ख) सघोष – जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन होता है, उन्हें सघोष कहते हैं; जैसे - ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड आदि

वर्ण-विच्छेद

किसी भी शब्द की वर्तनी के सभी वर्णों के क्रम में अलग-अलग दिखाना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। इससे शब्दों के सही उच्चारण करने में सुविधा होती है। जैसे–

मृगनयनी – म + ऋ + ग् + अ + न् + अ + य् + अ + न् + ई

व्याकरण – व् + य् + आ + क् + अ + र् + अ + ण् + अ

दिल्ली – द् + इ + ल् + ल् + ई

उज्ज्वल – उ + ज् + ज् + व् + अ + ल् + अ

******

पाठ-2 वर्ण-विचार

गृह-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें—

(क) वर्ण किसे कहते हैं तथा वर्ण के कितने भेद हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट करो।

(ख) स्वर से आप क्या समझते हैं? स्वर के कितने भेद हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट करो।

(ग) व्यंजन से आप क्या समझते हैं? विस्तारपूर्वक बताओ।

(घ) अल्पप्राण तथा महाप्राण में क्या अंतर है?

2. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाओ—

(क) हिंदी भाषा में 11 स्वर होते हैं। ☐

(ख) जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी ज़्यादा समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। ☐

(ग) व्यंजन के पाँच भेद होते हैं। ☐

(घ) अनुस्वार के उच्चारण में वायु नासिका तथा मुख दोनों से निकलती है। ☐

(ङ) जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन होता है, उन्हें सघोष कहते हैं। ☐

3. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद करो—

शिक्षिका —

उच्चारण —

सज्जनता —

स्वामिनी —

आशीर्वाद —

*****

Scanned with CamScanner